REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 7 | APRIL - 2019

खण्डवा जिले के सर्व शिक्षा अभियान कार्यक्रम का प्राथमिक कक्षा के विद्यार्थियों की उपस्थिति पर प्रभाव का अध्ययन

मोहनलाल ठाकुर
प्राचार्य, मिलेनियम बीएड. कॉलेज, बुरहानपुर (म. प्र.)

प्रस्तावना :

भारत में गरीबी, बेरोजगारी, जनसंख्या वृद्धि, बाल मजदूरी बाल-अपराध जैसी जटिल समस्याएँ फैली हुई हैं। इन सभी समस्याओं का मूल कारण है निरक्षरता। निरक्षरता की इस समस्या को दूर करने के लिये सरकार के द्वारा समय-समय पर कोई योजनाएँ भी चलाई गयीं। जैसे-ऑपरेशन ब्लेक बोर्ड, राजीव गांधी शिक्षा मिशन आदि परन्तु फिर भी उन्हें आशानुरूप सफलता प्राप्त नहीं हो सकी। इन सभी योजनाओं में आ रही रुकावटों एवं इनकी कमियों को दूर करने के लिये सरकार ने सन् २००२ में एक नवीन कार्यक्रम की शुरूआत की जिसका नाम ‘‘सर्व शिक्षा अभियान’’ रखा गया। सर्व शिक्षा अभियान के द्वारा ६ वर्ष से १४ वर्ष तक की आयु के सभी बच्चों को सन् २०१० तक उपयोगी एवं प्रासंगिक शिक्षा प्रदान करना था।

सर्व शिक्षा अभियान के उद्देश्यों में एक उद्देश्य विद्यार्थियों की नामांकन वृद्धि बढाना है। सर्व शिक्षा अभियान के प्रारम्भ होने से पूर्व चली आ रही योजनाओं की कमियों तथा इनके क्रियान्वयन में आने वाली कठिनाइयों का पता लगाने हेतु शोधकों के द्वारा समय-समय पर कई कार्य किये गये हैं जिसमें प्रौढ़ शिक्षा के मूल्यांकन से संबंधित भी कई शोध शामिल हैं : सिंह (१९७०) ने दो भारतीय गाँवो में साक्षरता का अध्ययन किया, चिकेरमाने (१९७९) ने विद्यालय से बाहर के बच्चों के लिये प्राथमिक औपचारिकेतर शिक्षा का अध्ययन किया, नटराजन (१९८१) ने गिरियक ब्लॉक (पटना) के प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम का मूल्यांकन किया, दवे (१९८१) ने राजस्थान में औपचारिकेतर शिक्षा के क्रियान्वयन की स्थिति का सर्वेक्षण किया, देसाई, पटेल एवं शाह (१९८२) ने गुजरात राज्य के प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम का अध्ययन किया गुप्ता (१९८३) ने मध्यप्रदेश राज्य में विभिन्न संस्थाओं के द्वारा संचालित औपचारिकेतर शिक्षा कार्यक्रम (उम्र समूह ०९ से १४ वर्ष) का आलोचनात्मक अध्ययन किया, औलख (१९८३) ने राज्यस्थान में औपचारिकेतर शिक्षा कार्यक्रम के मूल्यांकन की व्यूह रचना का विकास किया, गांगुली (१९८४) ने विश्वविद्यालयों के द्वारा प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम का अध्ययन किया, त्रिवेदी (१९८४) ने प्रौढ़ शिक्षा में विरतता का अध्ययन किया, पाती (१९८४) ने नवसाक्षरों की पठन आवश्यकताओं एवं रुचि का विश्लेषण किया, निम्बालकर (१९८५) ने गोवा में चल रहे प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम का मूल्यांकन किया, खजूरिया एवं राही (१९८५) ने कुरूक्षेत्र में क्रियान्वित प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम का मूल्यांकन किया राजलक्ष्मी (१९८६) ने ०९-१४ वर्ष की उम्र के बच्चों के लिये औपचारिकेतर शिक्षा के कुछ पहलुओं का मूल्यांकन किया पोद्दार (१९८६) ने औपचारिकेतर शिक्षा केन्द्रों का पर्यवेक्षण, प्रशासन तथा प्रौढ़ शिक्षा का मूल्यांकन किया, नानी पन्तुलु (१९८६) ने ०९-१४ उम्र समूह के औपचारिकेतर शिक्षा के शैक्षणिक पहलुओं का मूल्यांकन किया, मूर्ति (१९८६) ने आंध्रप्रदेश के प्राथमिक अवस्था के औपचारिकेतर शिक्षा केन्द्रों का मूल्यांकन प्रशासनिक दृष्टिकोण से किया, यादव (१९८७) ने उत्तरप्रदेश में ०९-१४ वर्ष की उम्र के बच्चों के लिये औपचारिकेतर शिक्षा कार्यक्रम का अध्ययन किया,

उपरोक्त शोध अध्ययनों से यह विदित होता है कि मूल्यांकन के क्षेत्र में शोध अध्ययनों में सर्वशिक्षा अभियान का उपस्थिति पर प्रभाव पर कोई शोध कार्य पूर्व में नहीं हो पाया है। इसलिये प्रस्तुत शोध ''खण्डवा जिले के सर्वशिक्षा अभियान कार्यक्रम का प्राथमिक कक्षा के विद्यार्थियों की उपस्थिति पर प्रभाव का अध्ययन'' की आवश्यकता प्रतिपादित होती है।

उद्देश्य

खण्डवा जिले के सर्व शिक्षा अभियान कार्यक्रम का प्राथमिक कक्षा के विद्यार्थियों की उपस्थिति पर प्रभाव का अध्ययन करना

न्यादर्श

सर्वशिक्षा अभियान उपस्थिति प्रपत्र में विद्यार्थियों की कक्षावार औसत मासिक उपस्थिति एंव औसत वार्षिक उपस्थिति को लिया गया। यह उपस्थिति खण्डवा जिले में सर्वशिक्षा अभियान के लागू होने के पूर्व के चार वर्षों तथा सर्वशिक्षा अभियान के लागू होने के पश्चात् के चार वर्षों की ली गई।

खण्डवा जिले के ७ विकासखण्डों के ११० प्राथमिक विद्यालयों का चयन स्तरीकृत दैव न्यादर्श के रूप में विद्यार्थियों की उपस्थिति के आकलन हेतु किया गया। इसे तालिका १.१ में दर्शाया गया है–

तालिका १.१ खण्डवा जिले के ७ विकासखण्डों की प्राथमिक शालाओं की कुल संख्या तथा न्यादर्श के आकार तथा प्रकार को दर्शाती हुई तालिका

क्र.	खण्डवा जिले के विकासखण्डों के नाम	न्यादर्श का प्रकार	प्राथमिक विद्यालयों की कुल संख्या	न्यादर्श का आकार
१	खण्डवा	दैव	१६७	१७
२	पुनासा	दैव	१६४	२०
३	छैगॉवमाखन	दैव	१२८	१३
४	पंधाना	दैव	२११	२१
५	हरसूद	दैव	१०४	११
६	खालवा	दैव	२२०	२२
७	बलड़ी	दैव	५४	०६

स्रोतः सर्वशिक्षा अभियान केन्द्रीय कार्यालय, खण्डवा (म.प्र)

उपकरण

प्रस्तुत शोध में प्राथमिक कक्षा के विद्यार्थियों की वर्षवार, कक्षावार तथा लिंगवार, उपस्थिति की जानकारी को एकत्र करने के लिये शोधक के द्वारा सर्वशिक्षा अभियान उपस्थिति प्रपत्र का विकास किया गया। सर्वशिक्षा अभियान उपस्थिति प्रपत्र में विद्यार्थियों की कक्षावार औसत मासिक उपस्थिति एंव औसत वार्षिक उपस्थिति को लिया गया। यह उपस्थिति खण्डवा जिले में सर्वशिक्षा अभियान के लागू होने के पूर्व के चार वर्षों तथा सर्वशिक्षा अभियान के लागू होने के पश्चात् के चार वर्षों की ली गई।

प्रदत्त संकलन

प्रस्तुत अध्ययन में प्रदत्त संकलन हेतु सर्वप्रथम खण्डवा जिले के सर्वशिक्षा अभियान के केन्द्रीय कार्यालय प्रकोष्ठ में जाकर सर्वशिक्षा अभियान कार्यक्रम के जिला परियोजना समन्वयक से सर्म्पक कर अपने शोधकार्य का उद्देश्य बताकर उनसे प्रदत्त संकलन की अनुमति ली गई। सर्वशिक्षा अभियान के अन्तर्गत अध्ययनरत् विद्यार्थियों की वर्षवार, कक्षावार तथा लिंगवार उपस्थिति की जानकारी हेतु उन विद्यालयों के प्रधानाचार्यों के नाम एवं पते लिये गये ताकि प्रदत्त संकलन करने हेतु उनसे सर्म्पक स्थापित करने में सहायता मिले। इसके पश्चात् न्यादर्श में चयनित विद्यालयों में जाकर वहाँ पदस्थ प्रधानाचार्यों से सर्म्पक स्थापित किया गया तथा उन्हें अपना परिचय देकर अपने शोधकार्य के उद्देश्य से अवगत करवा कर, उनसे शोधकार्य हेतु अनुमति प्राप्त की गई फिर इन प्राथमिक विद्यालयों के सम्बन्धित शिक्षकों से विद्यार्थियों की वर्षवार, कक्षावार तथा लिंगवार उपस्थिति की जानकारी ली गई।

प्रदत्त विश्लेषण

प्रदत्त विश्लेषण हेतु प्रतिशत विधि का उपयोग किया गया।

परिणाम एवं विवेचना

विद्यार्थियों की वर्षवार, कक्षावार तथा लिंगवार उपस्थिति से सम्बन्धित परिणाम एवं विवेचना-विद्यार्थियों की वर्षवार, कक्षावार तथा लिंगवार उपस्थिति से सम्बन्धित परिणाम एवं विवेचना को यहाँ पर प्रस्तुत किया गया है।

तालिका २.१ विद्यार्थियों की वर्षवार तथा कक्षावार औसत वार्षिक उपस्थिति को दर्शाती तालिका

वर्ष	कक्षा पहली	कक्षा दूसरी	कक्षा तीसरी	कक्षा चौथी	कक्षा पाँचवीं
१९९९-२०००	६४	६५	६८	६९	७१
२०००-२००१	६९	७१	७३	७५	७६
२००१-२००२	६५	६७	७०	७२	७४
२००२-२००३	६३	६४	६७	७०	७३
२००३-२००४	६८	७०	७३	७५	७८
२००४-२००५	७१	७३	७६	७८	८१
२००५-२००६	७५	७१	८०	८३	८५
२००६-२००७	७७	८०	८२	८५	८७

तालिका २.१ के निरीक्षण से यह ज्ञात होता है कि खण्डवा जिले में सर्वशिक्षा अभियान के लागू होने के पूर्व के चार वर्षों में वर्ष १९९९-२००० में विद्यार्थियों की औसत वार्षिक उपस्थिति, कक्षा पहली में ६४ प्रतिशत, कक्षा दूसरी में ६५ प्रतिशत, कक्षा तीसरी में ६८ प्रतिशत, कक्षा चौथी में ६९ प्रतिशत तथा कक्षा पाँचवीं में ७१ प्रतिशत है। वर्ष २०००-२००१ में विद्यार्थियों की औसत वार्षिक उपस्थिति, कक्षा पहली में ६९ प्रतिशत, कक्षा दूसरी में ७१ प्रतिशत, कक्षा तीसरी में ७३ प्रतिशत, कक्षा चौथी में ७५ प्रतिशत तथा कक्षा पाँचवीं में ७६ प्रतिशत है। वर्ष २००१-२००२ में विद्यार्थियों की औसत वार्षिक उपस्थिति, कक्षा पहली में ६५ प्रतिशत, कक्षा दूसरी में ६७ प्रतिशत, कक्षा तीसरी में ७० प्रतिशत, कक्षा चौथी में ७२ प्रतिशत तथा कक्षा पाँचवीं में ७४ प्रतिशत है। वर्ष २००२-२००३ में विद्यार्थियों की औसत वार्षिक उपस्थिति, कक्षा पहली में ६३ प्रतिशत, कक्षा दूसरी में ६४ प्रतिशत, कक्षा तीसरी में ६७ प्रतिशत, कक्षा चौथी में ७० प्रतिशत तथा कक्षा पाँचवीं में ७३ प्रतिशत है।

तालिका २.१ में सर्वशिक्षा अभियान के लागू होने के पश्चात् के चार वर्षों में, वर्ष २००३-२००४ में विद्यार्थियों की औसत वार्षिक उपस्थिति, कक्षा पहली में ६८ प्रतिशत, कक्षा दूसरी में ७० प्रतिशत,

कक्षा तीसरी में ७३ प्रतिशत, कक्षा चौथी में ७५ प्रतिशत तथा कक्षा पाँचवीं में ७८ प्रतिशत है। वर्ष २००४-२००५ में विद्यार्थियों की औसत वार्षिक उपस्थिति, कक्षा पहली में ७१ प्रतिशत, कक्षा दूसरी में ७३ प्रतिशत, कक्षा तीसरी में ६८ ७६ प्रतिशत, कक्षा चौथी में ७८ प्रतिशत तथा कक्षा पाँचवीं में ८१ प्रतिशत है। वर्ष २००५-२००६ में विद्यार्थियों की औसत वार्षिक उपस्थिति, कक्षा पहली में ७५ प्रतिशत, कक्षा दूसरी में ७१ प्रतिशत, कक्षा तीसरी में ८० प्रतिशत, कक्षा चौथी में ८३ प्रतिशत तथा कक्षा पाँचवीं में ८५ प्रतिशत है। वर्ष २००६-२००७ में विद्यार्थियों की औसत वार्षिक उपस्थिति, कक्षा पहली में ७७ प्रतिशत, कक्षा दूसरी में ८० प्रतिशत, कक्षा तीसरी में ८२ प्रतिशत, कक्षा चौथी में ८५ प्रतिशत तथा कक्षा पाँचवीं में ८७ प्रतिशत है।

तालिका २.१ में खण्डवा जिले में सर्वशिक्षा अभियान के लागू होने के पूर्व के चार वर्षों के प्रदत्तों तथा सर्वशिक्षा अभियान के लागू होने के पश्चात् के चार वर्षों के प्रदत्तों के निरीक्षण से यह ज्ञात होता है कि खण्डवा जिले में सवशिक्षा अभियान के लागू होने के पूर्व के चार वर्षों में विद्यार्थियों की वर्षवार औसत वार्षिक उपस्थिति में किसी वर्ष वृद्धि हुई है तथा किसी वर्ष कमी हुई है। जैसे-वर्ष १९९९-२००० में विद्यार्थियों की औसत वार्षिक उपस्थिति, कक्षा पहली में ६४ प्रतिशत, कक्षा दूसरी में ६५ प्रतिशत, कक्षा तीसरी में ६८ प्रतिशत, कक्षा चौथी में ६९ प्रतिशत तथा कक्षा पाँचवीं में ७१ प्रतिशत थी जबकि वर्ष २०००-२००१ में विद्यार्थियों की औसत वार्षिक उपस्थिति, कक्षा पहली में ६९ प्रतिशत, कक्षा दूसरी में ७१ प्रतिशत, कक्षा तीसरी में ७३ प्रतिशत, कक्षा चौथी में ७५ प्रतिशत तथा कक्षा पाँचवीं में ७६ प्रतिशत थी। अतः वर्ष १९९९-२००० की तुलना में वर्ष २०००-२००१ में विद्यार्थियों की औसत वार्षिक उपस्थिति में अपेक्षाकृत वृध्दि हुई । इसी प्रकार वर्ष २००१-२००२ में विद्यार्थियों की औसत वार्षिक उपस्थिति, कक्षा पहली में ६५ प्रतिशत, कक्षा दूसरी में ६७ प्रतिशत, कक्षा तीसरी में ७० प्रतिशत, कक्षा चौथी में ७२ प्रतिशत तथा कक्षा पाँचवीं में ७४ प्रतिशत थी। वर्ष २०००-२००१ की तुलना में वर्ष २००१-२००२ में विद्यार्थियों की कक्षावार औसत वार्षिक उपस्थिति में अपेक्षाकृत कमी हुई। इसी प्रकार वर्ष २००२-२००३ में विद्यार्थियों की औसत वार्षिक उपस्थिति, कक्षा पहली में ६३ प्रतिशत, कक्षा दूसरी में ६४ प्रतिशत, कक्षा तीसरी में ६७ प्रतिशत, कक्षा चौथी में ७० प्रतिशत तथा कक्षा पाँचवीं में ७३ प्रतिशत थी। अतः वर्ष २००१-२००२ की तुलना में वर्श २००२-२००३ में विद्यार्थियों की कक्षावार औसत वार्षिक उपस्थिति में अपेक्षाकृत कमी हुई। खण्डवा जिले में सर्वशिक्षा अभियान के लागू होने के पूर्व के चार वर्षों में विद्यार्थियों की वर्षवार तथा कक्षावार औसत वार्षिक उपस्थिति में निरन्तरता का अभाव है किन्तु खण्डवा जिले में सर्वशिक्षा अभियान के लागू होने के चार वर्ष पश्चात् के प्रदत्तों का निरीक्षण करने पर यह ज्ञात होता है कि विद्यार्थियों की वर्षवार तथा कक्षावार औसत वार्षिक उपस्थिति में वर्षवार क्रमिक रूप में सार्थक वृद्धि हुई। जैसे-वर्ष २००३-२००४ में विद्यार्थियों की औसत वार्षिक उपस्थिति, कक्षा पहली में ६८ प्रतिशत, कक्षा दूसरी में ७० प्रतिशत, कक्षा तीसरी में ७३ प्रतिशत, कक्षा चौथी में ७५ प्रतिशत तथा कक्षा पाँचवीं में ७८ प्रतिशत थी। वर्ष २००४-२००५ में विद्यार्थियों की औसत वार्षिक उपस्थिति, कक्षा पहली में ७१ प्रतिशत, कक्षा दूसरी में ७३ प्रतिशत, कक्षा तीसरी में ७६ प्रतिशत, कक्षा चौथी में ७८ प्रतिशत तथा कक्षा पाँचवीं में ८१ प्रतिशत थी। वर्ष २००५-२००६ में विद्यार्थियों की औसत वार्षिक उपस्थिति, कक्षा पहली में ७५ प्रतिशत, कक्षा दूसरी में ७१ प्रतिशत, कक्षा तीसरी में ८० प्रतिशत, कक्षा चौथी में ८३ प्रतिशत तथा कक्षा पाँचवीं में ८५ प्रतिशत थी। वर्ष २००६-२००७ में विद्यार्थियों की औसत वार्षिक उपस्थिति, कक्षा पहली में ७७ प्रतिशत, कक्षा दूसरी में ८० प्रतिशत, कक्षा तीसरी में ८२ प्रतिशत, कक्षा चौथी में ८५ प्रतिशत तथा कक्षा पाँचवीं में ८७ प्रतिशत थी।

खण्डवा जिले में सर्वशिक्षा अभियान के लागू होने के पूर्व के चार वर्षों में विद्यार्थियों की औसत वार्षिक उपस्थिति में वर्षवार निरन्तर वृद्धि न होने के अग्र कारण हो सकते हैं- शासन के द्वारा लागू की गई विभिन्न योजनाओं जैसे- ऑपरेशन ब्लैक बोर्ड, शिक्षक समाख्या प्रायोजना, विकलाँग बच्चों की समेकित शिक्षा योजना, जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम, शिक्षा गारंटी योजना इत्यादि का क्रियान्वयन ठीक प्रकार से न हो पाने के कारण उनका प्रभाव विद्यार्थियों की उपस्थिति में अपेक्षित वृद्धि होने पर नहीं हुआ चूंकि ग्रामीण क्षेत्रों में ज़्यादातर माता-पिता अपने बच्चों की शिक्षा के प्रति गम्भीर एवं जागरूक

नहीं पाये जाते हैं जिसके कारण वे बच्चों को नियमित रूप से विद्यालय नहीं भेजते हैं जिससे प्रायः ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यालयों में बच्चों की उपस्थिति में कमी पायी जाती है अतः इसके लिये ग्रामीण क्षेत्रों में बच्चों के माता-पिता को जागरुक करने हेतु जन-जागरुकता अभियान के क्रियान्वयन में कमी हुई इसके अतिरिक्त विद्यालयों में स्वच्छ पीने के पानी की व्यवस्था न होना, सभी विद्यालयों में बालक एवं बालिकाओं के लिये मूत्रालयों एवं शौचालयों की पृथक व्यवस्था न हो पाना, विद्यालयों में खेल के मैदानों की व्यवस्था न होना, शिक्षण की परम्परागत् विधियों का प्रयोग, अनाकर्शक विद्यालय भवन, विद्यालय में कक्षा का नीरस वातावरण तथा शिक्षकों का गैर-शैक्षणिक कार्यों जैसे-चुनाव कार्यों, जनगणना, मतगणना इत्यादि में व्यस्त रहने के कारण विद्यार्थियों पर ध्यान न दे पाना इत्यादि इन सभी कारणों एवं अन्य कारणों से खण्डवा जिले में सर्वशिक्षा अभियान के लागू होने के पूर्व के चार वर्षों में विद्यार्थियों की उपस्थिति में निरन्तर वृद्धि नहीं हुई।

खण्डवा जिले में सर्वशिक्षा अभियान के लागू होने के पश्चात् के चार वर्षों के प्रदत्तों के निरीक्षण से यह ज्ञात होता है कि खण्डवा जिले में सर्वशिक्षा अभियान के लागू होने के पश्चात् के चार वर्षों में विद्यार्थियों की वर्षवार तथा कक्षावार औसत वार्षिक उपस्थिति में वर्षवार क्रमिक रूप में सार्थक वृद्धि हुई। इसके अग्र कारण हो सकते हैं- खण्डवा जिले में सर्वशिक्षा अभियान के लागू होने के साथ ही पूर्व में चली आ रही योजनाओं जैसे-ऑपरेशन ब्लैक बोर्ड, डी.पी.ई.पी., शिक्षा गारंटी योजना, महिला समाख्या, मध्याह्न भोजन, इत्यादि के सही क्रियान्वयन पर विशेष ध्यान देना, प्राथमिक कक्षा के विद्यार्थियों को मुफ्त में पाठ्य-पुस्तकों का वितरण करना, मुफ्त में गणवेशों का वितरण करना, अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति वितरण करना, नए विद्यालय भवनों की स्थापना करना, पुराने एवं जर्जर विद्यालय भवनों का नवीनीकरण करना, विद्यालय भवन तक पहुँचने वाले मार्गों का दुरूस्तीकरण करना, विद्यालयों में मूलभूत भौतिक संसाधनों जैसे-टाटपट्टी, फर्नीचर, श्यामपट्ट, प्रकाश की समुचित व्यवस्था करना, पीने के स्वच्छ पानी की व्यवस्था करना, विद्यालयों में मूत्रालयों एवं शौचालयों की व्यवस्था करना, विद्यालयों में खेल के मैदानों की व्यवस्था करना, विद्यालय में विद्यार्थियों के भोजन के लिए मध्याह्न भोजन की व्यवस्था करना, विद्यालयों में शिक्षण-सहायक सामग्रियों की व्यवस्था करना, प्राथमिक विद्यालयों में नए शिक्षकों की भर्ती करना, विद्यार्थियों के लिए रहवासी एवं अरहवासी सेतु पाठ्यक्रमों की व्यवस्था करना, शिक्षकों के लिए सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन करना, शिक्षक-पालक संघों का गठन करना, विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की आवश्यकता के अनुरूप शिक्षा की व्यवस्था करना, ग्रामीण क्षेत्रों में पालकों को अपने बच्चों को नियमित रूप से विद्यालय भेजने हेतु जागरूक करना, बच्चों का पारीवारिक सर्वेक्षण करना, बाल-मेलों का आयोजन करना इत्यादि।

तालिका २.२ बालकों की वर्षवार तथा कक्षावार औसत वार्षिक उपस्थिति को दर्शाती तालिका

वर्ष	कक्षा पहली	कक्षा दूसरी	कक्षा तीसरी	कक्षा चौथी	कक्षा पाँचवीं
१९९९-२०००	६६	६७	६९	७१	७३
२०००-२००१	७१	७३	७४	७७	७८
२००१-२००२	६७	६९	७२	७३	७६
२००२-२००३	६४	६५	६७	७२	७४
२००३-२००४	६९	७१	७३	७६	७९
२००४-२००५	७२	७५	७७	८०	८२
२००५-२००६	७६	७९	८१	८५	८७
२००६-२००७	७८	८२	८३	८७	८९

तालिका २.२ के निरीक्षण से यह ज्ञात होता है कि खण्डवा जिले में सर्वशिक्षा अभियान के लागू होने के पूर्व के चार वर्षों में वर्ष १९९९-२००० में बालकों की औसत वार्षिक उपस्थिति, कक्षा पहली में ६६ प्रतिशत, कक्षा दूसरी में ६७ प्रतिशत, कक्षा तीसरी में ६९ प्रतिशत, कक्षा चौथी में ७१ प्रतिशत तथा कक्षा पाँचवीं में ७३ प्रतिशत है। वर्ष २०००-२००१ में बालकों की औसत वार्षिक उपस्थिति कक्षा पहली में ७१ प्रतिशत, कक्षा दूसरी में ७३ प्रतिशत, कक्षा तीसरी में ७४ प्रतिशत, कक्षा चौथी में ७७ प्रतिशत तथा कक्षा पाँचवीं में ७८ प्रतिशत है। वर्ष २००१-२००२ में बालकों की औसत वार्षिक उपस्थिति, कक्षा पहली में ६७ प्रतिशत, कक्षा दूसरी में ६९ प्रतिशत, कक्षा तीसरी में ७२ प्रतिशत, कक्षा चौथी में ७३ प्रतिशत तथा कक्षा पाँचवीं में ७६ प्रतिशत है। वर्ष २००२-२००३ में बालकों की औसत वार्षिक उपस्थिति कक्षा पहली में ६४ प्रतिशत, कक्षा दूसरी में ६५ प्रतिशत, कक्षा तीसरी में ६७ प्रतिशत, कक्षा चौथी में ७२ प्रतिशत तथा कक्षा पाँचवीं में ७४ प्रतिशत है।

तालिका २.२ में खण्डवा जिले में सर्वशिक्षा अभियान के लागू होने के पश्चात् के चार वर्षों में वर्ष २००३-२००४ में बालकों की कक्षावार औसत वार्षिक उपस्थिति कक्षा पहली में ६९ प्रतिशत, कक्षा दूसरी में ७१ प्रतिशत, कक्षा तीसरी में ७३ प्रतिशत, कक्षा चौथी में ७६ प्रतिशत तथा कक्षा पाँचवीं में ७९ प्रतिशत है। वर्ष २००४-२००५ में बालकों की औसत वार्षिक उपस्थिति कक्षा पहली में ७२ प्रतिशत, कक्षा दूसरी में ७५ प्रतिशत, कक्षा तीसरी में ७७ प्रतिशत, कक्षा चौथी में ८० प्रतिशत तथा कक्षा पाँचवीं में ८७ प्रतिशत है। वर्ष २००५-२००६ में बालकों की औसत वार्षिक उपस्थिति कक्षा पहली में ७६ प्रतिशत, कक्षा दूसरी में ७९ प्रतिशत, कक्षा तीसरी में ८१ प्रतिशत, कक्षा चौथी में ८५ प्रतिशत तथा कक्षा पाँचवीं में ८७ प्रतिशत है। वर्ष २००६-२००७ में बालकों की औसत वार्षिक उपस्थिति, कक्षा पहली में ७८ प्रतिशत, कक्षा दूसरी में ८२ प्रतिशत, कक्षा तीसरी में ८३ प्रतिशत, कक्षा चौथी में ८७ प्रतिशत तथा कक्षा पाँचवीं में ८९ प्रतिशत है।

तालिका २.३ बालिकाओं की वर्षवार तथा कक्षावार औसत वार्षिक उपस्थिति को दर्शाती तालिका

वर्ष	कक्षा पहली	कक्षा दूसरी	कक्षा तीसरी	कक्षा चौथी	कक्षा पाँचवीं
१९९९-२०००	६१	६३	६६	६७	६९
२०००-२००१	६६	६८	७१	७३	७४
२००१-२००२	६३	६५	६७	७०	७२
२००२-२००३	६२	६३	६६	६८	७१
२००३-२००४	६७	६९	७२	७३	७६
२००४-२००५	६९	७१	७४	७६	७९
२००५-२००६	७३	७५	७९	८०	८३
२००६-२००७	७६	७८	८१	८२	८५

तालिका २.३ के निरीक्षण से यह ज्ञात होता है कि खण्डवा जिले में सर्वशिक्षा अभियान के लागू होने के पूर्व चार वर्षों में वर्ष १९९९-२००० में बालिकाओं की औसत वार्षिक उपस्थिति, कक्षा पहली में ६१ प्रतिशत, कक्षा दूसरी में ६३ प्रतिशत, कक्षा तीसरी में ६६ प्रतिशत, कक्षा चौथी में ६७ प्रतिशत तथा कक्षा पाँचवीं ६९ प्रतिशत है। वर्ष ७३ २०००-२००१ में बालिकाओं की औसत वार्षिक उपस्थिति, कक्षा पहली में ६६ प्रतिशत, कक्षा दूसरी में ६८ प्रतिशत, कक्षा तीसरी में ७१ प्रतिशत, कक्षा चौथी में ७३ प्रतिशत तथा कक्षा पाँचवीं ७४ प्रतिशत है। वर्ष २००१-२००२ में बालिकाओं की औसत वार्षिक उपस्थिति, कक्षा पहली में ६३ प्रतिशत, कक्षा दूसरी में ६५ प्रतिशत, कक्षा तीसरी में ६७ प्रतिशत, कक्षा चौथी में ७० प्रतिशत तथा कक्षा पाँचवीं ७२ प्रतिशत है। वर्ष २००२-२००३ में बालिकाओं की औसत

वार्षिक उपस्थिति, कक्षा पहली में ६२ प्रतिशत, कक्षा दूसरी में ६३ प्रतिशत, कक्षा तीसरी में ६६ प्रतिशत, कक्षा चौथी में ६८ प्रतिशत तथा कक्षा पाँचवीं ७१ प्रतिशत है।

तालिका २.३ में खण्डवा जिले में सर्वशिक्षा अभियान के लागू होने के पश्चात् के चार वर्षों में वर्ष २००३-२००४ में बालिकाओं की औसत वार्षिक उपस्थिति, कक्षा पहली में ६७ प्रतिशत, कक्षा दूसरी में ६६ प्रतिशत, कक्षा तीसरी में ७२ प्रतिशत, कक्षा चौथी में ७३ प्रतिशत, तथा कक्षा पाँचवीं में ७६ प्रतिशत है। वर्ष २००४-२००५ में बालिकाओं की औसत वार्षिक उपस्थिति, कक्षा पहली में ६६ प्रतिशत, कक्षा दूसरी में ७१ प्रतिशत, कक्षा तीसरी में ७४ प्रतिशत, कक्षा चौथी में ७६ प्रतिशत, तथा कक्षा पाँचवीं में ७६ प्रतिशत है। वर्ष २००५-२००६ में बालिकाओं की औसत वार्षिक उपस्थिति, कक्षा पहली में ७३ प्रतिशत, कक्षा दूसरी में ७५ प्रतिशत, कक्षा तीसरी में ७६ प्रतिशत, कक्षा चौथी में ८० प्रतिशत, तथा कक्षा पाँचवीं में ८३ प्रतिशत है। वर्ष २००६-२००७ में बालिकाओं की औसत वार्षिक उपस्थिति, कक्षा पहली में ७६ प्रतिशत, कक्षा दूसरी में ७८ प्रतिशत, कक्षा तीसरी में ८१ प्रतिशत, कक्षा चौथी में ८२ प्रतिशत, तथा कक्षा पाँचवीं में ८५ प्रतिशत है।

तालिका २.२ तथा तालिका २.३ के निरीक्षण से यह ज्ञात होता है कि खण्डवा जिले में सर्वशिक्षा अभियान के लागू होने के पूर्व के चार वर्षों में एवं सर्वशिक्षा अभियान के लागू होने के पश्चात् के चार वर्षों में बालकों की वर्षवार तथा कक्षावार औसत वार्शिक उपस्थिति, बालिकाओं की वर्षवार तथा कक्षावार औसत वार्षिक उपस्थिति की तुलना में अपेक्षाकृत अधिक है। इसके अग्र कारण हो सकते हैं- ग्रामीण क्षेत्रों में ज्यादातर अभिभावकों का बालिकाओं की अपेक्षा बालकों की शिक्षा पर ध्यान देना, बालिकाओं को घरेलू कार्यों में व्यस्त रखकर नियमित रूप से विद्यालय न भेजना, पालकों में बालिका-शिक्षा के प्रति जागरूकता की कमी होना, विद्यालयों में बालिकाओं के लिए पृथक मूत्रालयों एवं शौचालयों की कमी होना, विद्यालयों में महिला शिक्षिकाओं की कमी होना, इत्यादि कारणों से बालकों की तुलना में बालिकाओं की वर्षवार तथा कक्षावार औसत वार्षिक उपस्थिति में अपेक्षाकृत कमी हुई।

तालिका २.२ तथा तालिका २.३ के निरीक्षण से यह भी ज्ञात होता है कि खण्डवा जिले में सर्वशिक्षा अभियान के लागू होने के पूर्व के चार वर्षों की अपेक्षा सर्वशिक्षा अभियान के लागू होने के पश्चात् के चार वर्षों में प्राथमिक कक्षा के बालक तथा बालिकाओं की वर्षवार तथा कक्षावार औसत वार्षिक उपस्थिति में अपेक्षाकृत वृद्धि हुई। खण्डवा जिले में सर्वशिक्षा अभियान के लागू होने के पूर्व के चार वर्षों की अपेक्षा सर्वशिक्षा अभियान के लागू होने के पश्चात् के चार वर्षों में प्राथमिक कक्षा के बालक तथा बालिकाओं की वर्षवार तथा कक्षावार औसत वार्षिक उपस्थिति में अपेक्षाकृत वृद्धि होने के अग्र कारण हो सकते हैं- सर्वशिक्षा अभियान के लागू होने के पश्चात् शासन द्वारा चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं जैसे-ऑपरेशन ब्लैक बोर्ड, डी.पी.ई.पी., शिक्षा गारंटी योजना, पढ़ना-बढ़ना, मध्याह भोजन आदि का क्रियान्वयन सुचारू रूप से करना, विद्यालयों का समय-समय पर पर्यवेक्षण करना, विद्यालयों में शिक्षकों की उपस्थिति सुनिश्चित करना, बालक एवं बालिकाओं को मुफ्त में पाठ्य-पुस्तकों का वितरण करना, गणवेशों का वितरण करना, अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के बालक-बालिकाओं को छात्रवृत्ति का वितरण करना, विद्यालयों में पीने के स्वच्छ पानी की व्यवस्था करना, बालिकाओं के लिए पृथक मूत्रालयों एवं शौचालयों की व्यवस्था करना, बालिकाओं के शिक्षण हेतु महिला शिक्षिकाओं की भर्ती करना, विद्यालयों में बालिकाओं की उपस्थिति बढ़ाने एवं बालिका शिक्षा पर ध्यान देने हेतु जनजागृति शिविरों का आयोजन करना, ग्राम चौपालों का आयोजन करना, बाल-मेलों का आयोजन करना, शिक्षक-पालक संघ की बैठकों का आयोजन करना, घर-घर जा कर सम्पर्क अभियान करना, विद्यालय के वरिष्ठ विद्यार्थियों द्वारा रैलियों का आयोजन करना, सांस्कृतिक नाटकों, लोक-संगीतों एवं खेल प्रतियोगिताओं के द्वारा जन-जागरूकता विकसित करना, विद्यालय के वातावरण को रोचक बनाने का प्रयास करना, विद्यालयों में खेल के मैदानों की व्यवस्था करना, नए शिक्षकों की भर्ती करना, तथा विशेष आवश्यकता वाले बच्चों पर विशेष ध्यान देना इत्यादि। तालिका २.४ तथा तालिका २.५ में सर्वशिक्षा अभियान के अन्तर्गत अध्ययनरत् खण्डवा जिले के प्राथमिक कक्षा के बालक एवं बालिकाओं के सर्वशिक्षा अभियान के लागू होने के चार वर्ष पूर्व (वर्ष १९९९-२००० से वर्ष २००२-२००३) के तथा

सर्वशिक्षा अभियान के लागू होने के चार वर्ष पश्चात् (वर्ष २००३-०४ से वर्ष २००६-०७) के कक्षावार उपस्थिति के माध्य फलांकों को प्रस्तुत कर परिणामों की विवेचना की गई है।

तालिका २.४ सर्वशिक्षा अभियान के लागू होने के चार वर्ष पूर्व तथा चार वर्ष पश्चात् की बालकों की कक्षावार औसत वार्षिक उपस्थिति के माध्य फलांकों को दर्शाती हुई तालिका

वर्ष	माध्य फलांक				
	कक्षा पहली	कक्षा दूसरी	कक्षा तीसरी	कक्षा चौथी	कक्षा पाँचवीं
सर्वशिक्षा अभियान के लागू होने के चार वर्ष पूर्व (१९९९-२०००से २००२-०३) की स्थिति	६७	६९	७१	७३	७५
सर्वशिक्षा अभियान के लागू होने के चार वर्ष पश्चात् (२००३-०४ से २००६-०७)की स्थिति	७३	७७	७९	८२	८४

तालिका २.५ सर्वशिक्षा अभियान के लागू होने के चार वर्ष पूर्व तथा चार वर्ष पश्चात् की बालिकाओं की कक्षावार औसत वार्षिक उपस्थिति के माध्य फलांकों को दर्शाती हुई तालिका

वर्ष	माध्य फलांक				
	कक्षा पहली	कक्षा दूसरी	कक्षा तीसरी	कक्षा चौथी	कक्षा पाँचवीं
सर्वशिक्षा अभियान के लागू होने के चार वर्ष पूर्व (१९९९-२०००से २००२-०३) की स्थिति	६३	६५	६८	७०	७२
सर्वशिक्षा अभियान के लागू होने के चार वर्ष पश्चात् (२००३-०४ से २००६-०७)की स्थिति	७१	७३	७७	७८	८१

खण्डवा जिले में सर्वशिक्षा अभियान के लागू होने के चार वर्ष पूर्व बालकों की कक्षावार औसत वार्षिक उपस्थिति के माध्य फलांक कक्षा पहली में ६७, कक्षा दूसरी में ६९, कक्षा तीसरी में ७१, कक्षा चौथी में ७३, तथा कक्षा पाँचवीं में ७५, हैं। खण्डवा जिले में सर्वशिक्षा अभियान के लागू होने के चार वर्ष पूर्व बालकाओं की कक्षावार औसत वार्षिक उपस्थिति के माध्य फलांक, कक्षा पहली में ६३, कक्षा दूसरी में ६५, कक्षा तीसरी में ६८, कक्षा चौथी में ७० तथा कक्षा पाँचवीं में ७२ हैं। खण्डवा जिले में सर्वशिक्षा अभियान के लागू होने के चार वर्ष पूर्व बालिकाओं के कक्षावार वार्षिक औसत उपस्थिति के माध्य फलांक, बालकों की कक्षावार वार्षिक औसत उपस्थिति के माध्य फलांकों तुलना में अपेक्षाकृत कम हैं।

LBP PUBLICATION

उपरोक्त प्रदत्तों के अवलोकन से यह स्पष्ट होता है कि खण्डवा जिले में सर्वशिक्षा अभियान के लागू होने के चार वर्ष पूर्व तक की बालकों की कक्षावार औसत वार्षिक उपस्थिति बालिकाओं की कक्षावार औसत वार्षिक उपस्थिति की तुलना में अपेक्षाकृत अधिक हैं।

अतः निष्कर्ष के रूप में यह कह सकते हैं कि यदि हम खण्डवा जिले में सर्व शिक्षा अभियान के प्रारम्भ होने ४ वर्ष पूर्व तथा सर्व शिक्षा अभियान के प्रारम्भ होने के ४ वर्ष पश्चात् के आँकडों को ध्यानपूर्वक देखें तो यह पाते हैं कि सर्व शिक्षा अभियान के प्रारम्भ होने के पूर्व के ४ वर्षों में विद्यार्थियों की उपस्थिति सर्व शिक्षा अभियान के प्रारम्भ होने के ४ वर्ष पश्चात् प्रतिवर्ष विद्यार्थियों की उपस्थिति में बढ़ोत्तरी हो रही है जो यह दर्शाता है कि खण्डवा जिले में सर्व शिक्षा अभियान के अन्तर्गत चल रही योजनाओं का सकारात्मक प्रभाव विद्यार्थियों की उपस्थिति पर पड़ा है।

सन्दर्भ

हिन्दी

१. अग्रवाल यु.सी. : सर्व शिक्षा अभियान वृहद् लक्ष्य-कमजोर प्रयास, भारतीय आधुनिक शिक्षा, वर्ष २२ अंक ३, जनवरी २००४, पृष्ठ ०६-१४
२. अग्रवाल, बी.बी. : आधुनिक भारतीय शिक्षा और समस्याएँ, आगरा : विनोद पुस्तक मन्दिर, १९९९
३. भाटिया, के.के. एवं चढ्ढा : आधुनिक भारतीय शिक्षा और समास्याएँ, लुधियाना : प्रकाश ब्रदर्स १९८०.
४. सिंह, नरेन्द्र कुमार : प्राथमिक शिक्षा में अपव्यय एवं अवरोधन, प्राथमिक शिक्षक वर्ष २९, अंक-१ जनवरी २००४, पृष्ठ १४-१९,

अंग्रेज़ी

Buch, M.B. (ed.) A Survey of Research in Education. Baroda : Center of Advanced Study in Education, 1974.
Buch, M.B. (ed.) Second Survey of Research in Education. Baroda : Society for Educational Research & Development, 1979.
Buch, M.B. (ed.) Third Survey of Research in Education. New Delhi : National Council of Educational Research and Training 1986.
Buch, M.B. (ed.) Forth Survey of Research in Education. Vol I & II New Delhi : National Council of Educational Research & Training 1991.
Website: www.dauniv.ac.in .

LBP PUBLICATION